प्रकाशकीय वक्तव्य ।

प्रिय सज्जन वृन्द ! मै आपको सबसे पहले इस पुस्तकके कर्त्ता महाशयका संक्षिप्त परिचय करा देना बहुत उचित समझता हूं ।

पुस्तकके कर्ता महाशय मुंशी हीरालालजी साहिबका जन्म संवत् १९२० में खंडेलवाल जैन जाति संबंधी छावडा गोत्रमें माननीय सेठ लक्ष्मणलालजी छावडाके घरमें हुआ । श्रीयुत सेठ लक्ष्मणलालजी यद्यपि सर्राफीकी दुकान करते थे तो भी आपने हमारे वकील साहिबको रुचिके अनुसार हिन्दी उर्दू व फारसीकी शिक्षा दिलाई । आपने थोडे समयमें ही अपनी प्रभाविनी बुद्धिके अनुसार खूब विद्या प्राप्त करली और आप अपनी जन्मभूमि जयपुर नगरमें ही रियासतके उच्च महकमेमें उच्च मुलाजिम हो गये । आपने वहां कई वर्षों तक बहुत योग्यताके साथ कार्य किया । पीछे आपने वकालात करना प्रारंभ कर दिया । अस्तु, आज आप जयपुरके बहुत प्रतिष्ठित वकीलोंकी मुख्य गणनामें गिने जाते हैं और न्यायपरायणता व धर्मपरायणतामें प्रसिद्ध हैं ।

आपकी धर्मरुचिका नमूना हमको देनेकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि हमारे सुयोग्य सहृदय पाठक इस पुस्तक निर्माणसे ही समझ गये होंगे । वकीलसाहबके खयाल धर्मशास्त्रानुकूल' इसीलिए

रहते हैं कि आपकी धर्ममें रुचि प्रथमसे ही है। विशेष रुचि आपकी कुछ वर्षोंसे इतनी बढ़ गई है कि आप अपनी आजीविकाको गौण समझते हुए धर्म कार्यमें विशेष समय लगाते हैं।

अब इस पुस्तकके विषयमें भी कुछ लिखता हूं।

यह पुस्तक समस्त पूजाग्रथों का सार है तथा भक्तिमार्गका मुख्य साधन है। कई बातें ऐसी खोज के साथ-लिखीगई हैं जिनका पता कई ग्रथोंके देखने से भी नहीं लगे। पद्य रचना सरल और सरस एवं भाव तथा भक्ति गर्भित है। पूजा करनेवालों को इससे कई तरह की सुविधाऐं प्राप्त होंगी। वास्तव में वकील साहब ने एक उपयोगी पुस्तक बनाकर धार्मिक जैन समाजका उपकार किया है इसलिये वकील साहिब धन्यवाद के पात्र हैं और विशेष धन्यवादार्ह यों हैं कि आपने अपनी न्यायोपार्जित लक्ष्मी का इस पुस्तकके संपादनसे विशेष सदुपयोग किया है यदि पाठक गण इस पुस्तक को अपनावेंगे तो आशा है कि वकील साहब और भी अपनी भक्तिरस पूर्ण कृतिका आस्वादन करावेंगे।

सहृदयों का दास—
इन्द्रलाल शास्त्री,
जयपुर।

दीपमालिका
वी० सं० २४४६

प्रस्तावना ।

प्रिय पाठकगण !

मेरा सं० १९७२ में श्रीसम्मेदशिखरजी की यात्राका विचार हुआ और तदनुसार मैं वहां गया और भगवानके गुणानुवाद गाकर पूजा करनेके लिए मैंने कोई मनोनुकूल छोटा पाठ तलाश किया परंतु नहीं मिला तब मैंने प्राचीन कवियों द्वारा बनाई हुई स्तुतियोंसे भगवान्‌का गुणानुवाद गाया, अस्तु वहांसे लौटने पर मैंने यह विचार किया कि कोई ऐसा छोटा पाठ बनाया जावे जिससे यात्रियोंको बहुत सुभीता हो तथा अनेक रागरागिनियों द्वारा अपने चित्तको उत्साहित करके भक्ति युक्त करें इस विचार हो विचारमें सुगंधदशमीका दिन आया। इसदिन यहां धन्नालालजी सौगानीके श्रीमंदिरजीमें भजन होते हैं भजन समयमें एक ग्रामीण भाईने खुदके बनाए हुए भजनोंसे भगवान के गुणानुवाद गाए। उन भजनोंको सुनकर मेरे चित्तमें दृढ़ श्रद्धान होगया कि भगवानकी भक्तिके वश सरस्वती है।

मेरी जो कुछ धर्ममें रुचि श्रीयुक्त प्रातःस्मरणीय मन्नालालजी खंडीवार 'जोकि जयपुरमें एक नामी विद्वान् व पुरुष होगए हैं' के सदुपदेशसे थी उसकी वृद्धि इन भजनोंके सुननेसे औरभी होगई अस्तु रुचि तो होगई परंतु सिर्फ रुचि ही क्या करे क्योंकि इतनी विद्याकी योग्यता नहीं, कारण कि मैं संस्कृत नहीं पढ़ा और पद्यरचना आदि कुछ नहीं कर जानता। खैर ! तो भी मैंने जिन वाणीकी भक्तिके प्रभावसे कई भजन बनाए जिन्हें यथासमय प्रकाशित करूंगा तथा यह पूजन

बनाई जो आप सज्जनोंके सामने उपस्थित है इसमें जो कुछ न्यूनाधिकता हो उससे पाठक महाशय मुझे भी सूचित करें जिससे आगेके संस्करणमें ठीक २ प्रकाशित करा दी जाय। इस पुस्तकके शोधनमें मुझे निम्नलिखित महाशयोंसे सहायता मिली है अतः मैं हृदयसे आभार मानता हुआ उन्हें धन्यवाद देता हूं।

श्रीमान् पंडित चौथमलजी शर्म्मा ज्योतिषी, पंडित इन्द्रलालजी शास्त्री- जयपुर
" पंडित कस्तूरचंदजी साह, पंडित सूयालालजी पाटनी जयपुर

और मैं अपने प्रियपुत्र चि० बालचंद्रको भी हृदयसे आशीर्वाद देता हूं जिसने लिखने, गानेकी चाल बताने आदि कई कार्योंमें यथाशा मदद दी है अन्तमें पाठक महाशयोंसे मेरा यह निवेदन है कि भगवानके गुणानुवाद नित्य प्रति करें तथा धर्मलाभ उठावें और इस पुस्तकके गुणोंका ग्रहण करें और अवगुण निकाल देवें क्योंकि—"हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः"।

धर्मानुरागी सज्जनोंका दास
मुन्शी हीरालाल वकील सरिश्ता
जयपुर स्टेट

नोट—यह पुस्तक सिर्फ डांक महसूल [आध आनेका टिकट] आने पर विनामूल्य भेजी जायगी

पता—मुन्शी हीरालाल वकील सरिश्तः
आफग्रोंका रास्ता जयपुर सिटी।

पूजन करनेवाले भाइयोंको खास सूचना ।

१। प्रथम श्रीजिनेन्द्रदेवकी समुच्चय स्थापना करके अष्टद्रव्यसे पूजन करें फिर जिन भगवानके क्षेत्रकी वंदना करने जावें प्रारंभसे ही उन वंदनीय भगवानकी स्तुति गान करना प्रारंभ कर देवें और जब क्षेत्र पर पहुंच जावें तो खास भगवानकी पंचकल्याणकी तिथि नक्शेसे मालुम करके पूर्णार्घ चढ़ावें इसही तरहसे प्रत्येक जिनालयकी पूजन करें।

२। यदि अलग २ पूजन तथा कोई खास तीर्थंकरकी ही पूजन की जावे तो इसही प्रकार इनही मंत्रोंसे स्थापना आदि करके जयमाला पढ़ें पुनः शांतिपाठ आदि यथावत् करें।

३। यदि चौवीसो तीर्थंकरोंकी समुच्चय पूजन ही की जावे तो समुच्चय स्थापना, अष्ट द्रव्य, पंचमंगलादिका पाठ पढकर जयमाला पढें और सिर्फ समुच्चयार्घ द्वारा पूजन करें।

४ । यदि प्रत्येक तीर्थंकरकी विस्तारपूर्वक पूजन करना हो तो स्थापना, अष्टद्रव्य आदि तो समुच्चयवत् चढावें और जयमाला उनही तीर्थंकरकी बोलें ।

५ । यदि विशेष अवकाश न मिले तो जयमाला पढकर संपूर्ण तीर्थंकरोंको समुच्चय मंत्र द्वारा समुच्चयार्घ प्रदान करें ।

६ । प्रत्येक भगवानकी साज बाज पर गाने बजानेके साथ भी अत्यंत भक्तिसे पूजन हो सकती है इसमें जितनी देर लगाना हो लगा सकते हैं ।

निवेदक—

मुंशी हीरालाल वकील सरिश्ता,

जयपुर स्टेट ।

[नोट] यों तो यह पूजन ही बनाई गई है परंतु यदि कोई भाई खाली भजन, स्तुति ही करना चाहे तो जयमाला द्वारा यह भी कर सकता है ।

ग्रंथकर्त्ता—



श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरोंकी

भजन गायन गर्भित पूजा।

मंगलाचरण।

चाल इंद्र सभा।

चौवीसों जिन पति नमूं, नमूं शारदा माय।
विघ्न हरण मंगल करण, रचूं पाठ सुखदाय ॥ १ ॥

अथ समुच्चय पूजा ।

स्थापना ।

प्रकट हुये गुण सर्व दोष अष्टादश भाजे ।
प्रातिहार्यवसुयुक्त अतुल महिमा छबि छाजे ॥
समवशरणके माहि ज्ञान केवल युत राजे ।
कर्म अरिनको जीत लोकके शिखर विराजे ॥१॥

दोहा ।

ऐसे तीरथ नाथ प्रभु, जिनाधीश जग इद्ध ।
आ तिष्ठहु मम निकट अब, करो कार्य सब सिद्ध ॥

ओंह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानांतचतुर्विंशतितीर्थंकरपरमदेवसमूह अत्र अवतर अवतर (संवौषट्) अत्र तिष्ठ तिष्ठ (ठः ठः) अत्र मम सन्निहितो भव भव (वषट्)

अथ अष्टक ।

चाल जंगला ।

हे जिनेश गणधरेश , तार तार तार ।
गतिके च्यारके दुःखोंसे मोहि, टार टार टार (टेर) ।
झारीमें भरा शुद्ध जल, अर्पण है वार वार ।
मम जन्म मरण मेटिये दुठ कर्म मार मार ॥ १ ॥

ओंह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चाल शंखेटी ।

मेरे पुण्य उदय अब आयो, मैं शरण तिहारी पायो (टेर) ।
पावन चंदन कदली नंदन, घासि प्यालो भरि लायो ।
भव आताप निवारण कारन, तुम ढिग आन चढायो ॥चंदनं २॥

चाल धनगा ।

तारो मोकूं दीन दयाला, शरण तिहारी आयो (टेर) ।

अक्षत उज्वल प्राशुक लेकर, कंचन थाल भरायो ।
अक्षत पद पावनके कारन, तुम ढिंग भेंट चढायो ॥अक्षतं ॥३॥

चाल चौपाई ।

चँपा चमेली जूही ताजा, लायो प्रभु तुम पूजन काजा ।
भेंट धरूं मैं तुम जिनराई, कामवाण विध्वंस कराई ॥पुष्पं ॥४॥

चाल मांड ।

मैं आयो पूजन काज, प्रभु तुम विघ्न नशानेवाले (टेर)
मैं व्यंजन नाना लायो , सुवरणको थाल भरायो ॥
मेरी हरो क्षुधामई व्याध हो, तुम रोग मिटानेवाले ॥नैवेद्यं ॥५॥

चाल जंगला झझोटी ।

उबार दीज्योजी स्वामीजी मोरी नाव (टेर) ।
करूं आरती आपकी, दीपक ज्योति जगाय ।

अंधकार अज्ञानकों , दीज्यो शीघ्र नशाय ॥ दीपं ॥६॥

चाल उमाज ।

प्रभुजी मैं थानें पूजन आयो , मेरी अरज सुनों दीनानाथ (टेर)
अगर तगर कृष्णागुरु चंदन , धूप दशांग वनायो ।
अष्ट करमके नाश करनको , अगनी संग जलायो ॥ धूपं ॥७॥

चाल गोपीचंदको ।

मो पर करुणा कीजिये मैं दास तिहारा (टेर)
श्रीफल केला आम नरंगी , पके फल सव ताजा ।
लोंग छिवारा भेट चढाऊं , मोक्ष मिलनके काजा ॥ फलं ॥ ८ ॥

चाल मांड ।

हो जिन राजा `वामी , मैं तो थानैं पूजूं मन वचकाय (टेर) ।
अष्ट द्रव्य भर थालमें जी , लीनों अर्घ वनाय ।

पंचम गति मोहि दीजियेजी , पूजू अंग नमाय ॥ ९ ॥

ॐह्रीं ऋषभादि वीरांतेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ पंचकल्याणक ।

दोहा ।

छह महीनेके पूर्व ही , गर्भ समय जिनराय ।
धनपतिने नगरी रची , इंद्र सु आज्ञा पाय ॥

चाल चौपाई ।

गर्भवासमैं जब प्रभु आये । सोलह स्वप्ने मात लखाये ॥
छपन कुमार देवियां आईं । निज निज मनमैं अति हर्षाईं ॥
माताकी दासी सम होईं । करत भई सेवा सव कोईं ॥
ता दिनको मैं पूज रचायो । भक्ति भाव अति चित उमगायो ॥१॥

ओंह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां गर्भकल्याणकेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सोलह कारण पूरव भाया। तीर्थंकर पद ता फल पाया॥
तीन ज्ञान युत जन्म लहाया। पांडुशिला सुर न्हवन कराया॥
तांडव नृत्य इंद्र रचवाया। मात पितादिक मन हरषाया॥
भक्ति भाव मो मन अतिछाया। जन्मकल्याणक पूजन आया॥२॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

तप इच्छा जब तुम मन आई। लौकांतिक आ भक्ति बढाई॥
नगन दिगंबर रूप धराया। मन पर्जय तब ज्ञान लहाया॥
कर द्वादश विधि तप रस भीने। कर्म शत्रु तत छन छय कीने॥
तप कल्याणक पूज रचाऊं। येही अवसर मैं भी पाऊं॥ ३॥

ओं ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां तपकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

दोहा।

घाति चतुष्टय नाशकर, केवल ज्ञान लहाय।

दोष अठारह टार कर , अर्हत पद प्रगटाय ॥
छियालीस गुण प्राप्त कर , सभा जु द्वादश मांहि ।
भव्य जीव उपदेश कर , पहुंचाये शिव ठांहि ॥
पूजूं ज्ञान कल्याणको , धर चरणनमें शीश ।
भव वाधा मेरी हरो , हे त्रिभुन के ईश ॥४॥

ओंह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां ज्ञानकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गुणस्थान अंतिम लिया , किये कर्म सब नास ।
आठों गुणधारी भये, कीना शिवपुर वास ॥
अष्ट द्रव्य लै मैं करूं, कर्म नशावन हार ।
पूजा मोक्ष कल्याणकी , शिवरमणी भर्तार ॥ ५ ॥

ओंह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणांज्ञानकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

चौवीसों जिनराजकी , महिमा अपरंपार ।
वरनत सुरनर थकगये, कोउ न पायो सार ॥१॥

चाल चौपाई

ऋषभनाथ जिन धर्म धुरंधर । पूजैं ध्यावैं नमैं पुरंदर ॥
जीत सके न कर्म अरि यातैं । तुमको अजित कहत सब तातैं॥२॥
संभव भववाधा जग टारन । निर्भय पद देवैं सुख कारन ॥
अभिनंदन आनँदके कंदा । सुमरण करत मिटै भवफंदा ॥३॥
सुमति जिनेश्वर सुमती दाता । कुमत नशावन जग विख्याता ॥
पदम नाथ छट्टे जिनराई । धर्मामृतका पान कराई ॥४॥
नाथ सुपारस जगकी फांसा । काट किया शिवपुरमें वासा ॥

चंदा प्रभु शशितैं द्युति भारी । तप धर कर्मकलंक निवारी॥५॥
पूजत पुष्पदंत जिनराई । सो नर भव आतंक नशाई ॥
शीतल जगको शीतल कीना । चारौं गति आताप हरीना॥६॥
श्रीश्रेयांसश्रेयके करता । वंदन करत होइ दुख हरता ॥
वांसुपूज्य चंपापुर थाना । तीर्थ किया कर पंच कल्याना ॥७॥
विमलनाथ निर्मल विख्याता । भविजीवनकौं सुखके दाता ॥
तुम गुण गिनत पार नहिं आया । अनंत नाम यातैं प्रभु पाया ॥८॥
धर्म नाथ है जग उपकारी । रत्नत्रय दश लक्षण धारी ॥
शांतिनाथ शांतीके करता । दुःख शोक भय आदिक हरता ॥९॥
कुंथु भोग चक्री सुख नाना । कर्म काटि पहुंचे शिवथाना ॥
काम चक्रि अर तीरथ नाथा । त्रय पद जुत जिन अर विख्याता १०

लखि जिन मल्लि बाल ब्रमचारी । कामदेव लज्जित भयो भारी ॥
मुनिसुव्रत तीर्थंकर बीसा । काट कर्म वसु भये जगीसा ॥११॥
नमि जिन पूजत हैं सब आई । सुरनर मुनिजन भक्ति वढाई ॥
नेमिनाथ पशु करुणा धारी । तज दी राजुल राज दुलारी ॥१२॥
पारस चरण स्पर्श जु पाया । पार्स पहाड़ समेद कहाया ॥
वर्धमान प्रभु धर्मजिहाजा । भवजलतारन भव्य समाजा ॥१ ॥
दिव्यध्वनि कर धर्म बताया । सोही गौतम गुरुने गाया ॥
पंचम काल अंत तक येही । भविजनका उद्धार करेही ॥१४॥
'हीरा' मन जिन भक्ति सुहाई । अष्ट द्रव्य ले पूज रचाई ॥
तुमरी चरण शरण सुखदाई । भव भव में पाऊं जिनराई ॥१५॥

चाल घत्ता ।

चोवीस जिनंदा पापनिकंदा, सुखके कंदा जयवंता ।

मैं पूजूं ध्याऊं भक्ति बढाऊं, निज रस पाऊं भगवंता ॥१६॥

ओंह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ श्रीऋषभनाथजी स्वामीकी पूजा ।

चाल इन्द्र सभा ।

श्रीतीर्थंकर आदिके, ऋषभनाथ जिनराज ।
विघन हरण मंगल करन, तारन तरन जिहाज ॥ १ ॥
मोक्षमार्ग नेता प्रभू, भेत्ता कर्म कलेश ।
ज्ञाता लोकालोकके, वंदू हे जगतेश ॥ २ ॥
कुलकर जो थे चौदवें, नाभिराय भूपाल ।
मरुदेवी तिनकी प्रिया, रूप शील गुणमाल ॥ ३ ॥
बदि अषाढकी दौजको, ताके उर अवतार ।
पुरी अजोध्यामें लियो, सर्वारथ सिध छार ॥ ४ ॥

चैत्र कृष्ण नवमी तिथी, जनमे श्री जिनदेव।
शुद्ध वंश इक्ष्वाकुमैं, जगत करै तुम सेव ॥ ५ ॥
अपने अपने स्थानमें, सुनि घंटादिक नाद।
चतुर्णिकायक देव सब, आये तज परमाद ॥ ६ ॥
अति हर्षित सब इंद्र हो, देवादिक सँग लीन।
पुरी अजोध्या आयकैं, दी प्रदक्षणा तीन ॥ ७ ॥
गृह प्रसूतिमें जायके, इन्द्राणी जिनराय।
ला निज करतैं इन्द्रको, सौंपे शीश नमाय ॥ ८ ॥
ऐरावत पर इन्द्र ने, लीने गोद विठाय।
पांडुशिला ले जायके, थापे अति हर्षाय ॥ ९ ॥
पंचमक्षीरसमुद्र जल, हाथों हाथ मंगाय।

१००८ सहँस अठोतर कलशतैं, किया न्हवन जिनराय ॥ १० ॥
इन्द्राणीने भक्ति कर, किया योग्य शृंगार ।
नृत्यगान करती भई, उमगि उमगि सुरनार ॥ ११ ॥
कर नियोग आ नगरमें, उत्सव किया अपार ।
श्रीजिन सेवा करनकों, राखे देव कुमार ॥ १२ ॥
धन्य धन्य जयवंत प्रभु, यह कह बहु शिरनाय ।
गये सर्व निज थानको, मनमैं अति उमगाय ॥ १३ ॥
अंगुष्ठामृत पान कर, ज्यों दोयजका चंद ।
क्रमसौं बढत जिनेश तुम, स्वजन वृंद आनंद ॥ १४ ॥
युवा अवस्था प्राप्त कर, राज संपदा पाय ।
कर्मभूमिकी आदिमैं, राजनीति प्रगटाय ॥ १५ ॥

बांध सीम नगरादिकी , जन रक्षाके काज ।
रक्षा विधिमें निपुण अति , थापे क्षत्रिय राज ॥ १६ ॥
समझाई षट् कर्म विधि , वर्णभेद बतलाय ।
तातें हे प्रभु आपको , कहत ब्रह्म ऋषिराय ॥ १७ ॥
राज संपदा भोगतें , बीत गया बहुकाल ।
नीलांजन भेजी तुरत , सुरपति अवधि सँभाल ॥ १८ ॥
करत नृत्य नीलांजना , हाव भाव बतलाय ।
दिखा अपूरव दृश्यको , ततछन गई विलाय ॥ १९ ॥

इस कौतुकको देखकर , मनमें किया विचार ।
देह भोग अरु संपदा , है सब जगत असार ॥ २० ॥
बारह भावन चिंततें , लोकान्तिक सुर आय ।

कीनी थुति भगवानकी , धन्य धन्य जिनराय ॥ २१ ॥
चैत्र कृष्ण नवमी दिवस , बन प्रयागमैं जाय ।
सकल संग त्यागी भये , निर्मल चारित पाय ॥ २२ ॥
मनपर्जय तत्छन भया , भये आत्म लवलीन ।
षट् महिनेका नियम धर , थिर आसन जिन कीन ॥ २३ ॥
छह महीने बीते जबै , मार्ग चलावन काज ।
पुर ग्रामादिकमैं गये , अशन हेत जिनराज ॥ २४ ॥
अंतराय होते रहे , विधि नियोग छहमास ।
करत विहार जिनेशको , देखे नृप श्रेयाँस ॥ २५ ॥
पूर्व जन्म सुमरण भये , मुनि अहार विधि जान ।
नवप्रकार की भक्ति कर , पड़गाहे भगवान ॥ २६ ॥

दे जिन करमैं इक्षुरस , दानतीर्थ प्रगटाय ।
देवन कर पूजित भये , अति प्रसन्न नृपराय ॥ २७ ॥
तप दुर्द्धर प्रभुने किया , सही परीषह भूरि ।
शुक्लध्यानके योगतें , घाति किये चकचूरि ॥ २८ ॥
फागुण सुदि एकादशी , प्रगटा केवल ज्ञान ।
दिव्यध्वानितें जगतका , दूर भया अज्ञान ॥ २९ ॥
समोशरणके मध्यमें , हे त्रिभुनके राय ।।
भव्यनको उपदेश कर , मोक्षमार्ग प्रगटाय ॥ ३० ॥
माघ कृष्ण चौदस दिवस , अष्टापद गिरि शीश ।
मुक्ति नारि तुमने वरी , हे त्रिभुनके ईश ।॥ ३१ ॥
हे वृषभध्वज आपकी , धनुष पांचसौ काय ।

हेम वर्ण तन मोहनो, देखत मन हुलसाय ॥ ३२ ॥
लख चौरासी पूर्वकी, भई सु उत्तम आय ।
लक्षपूर्व तप धारकैं, पंचम गति तुम पाय ॥ ३३ ॥
दर्श आपको ना मिल्यो, तातैं हे वृषभेश ।
बहुत कालतैं भ्रमत हूं, काटो कर्म कलेश ॥ ३४ ॥
धन्य भाग मेरो भयो, पूजन आयो आज ।
"हीरा" की वाधा हरो, सिद्ध करो मम काज ॥ ३५ ॥

ओं ह्रीं वृषभनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ श्री अजितनाथ स्वामीकी पूजा ।

चाल जंगल भंभोटी ।

तिराय दीज्योजी प्रभुजी मोरी नाव (टेर)

अजितनाथ जिन राज तुम , सकल गुणोंकी खान ।
सर्व दोष मेरो हरो , होय पापकी हान ॥ १ ॥
जेठ अमावसकी प्रभू , छांडा विजय विमान ।
विजया माता उर वसे , जय जंय जय भगवान ॥ २ ॥
माघ सुकल दशमी दिवस , हुआ जन्म कल्यान ।
जितशत्रू भूपाल घर , वटा किमिच्छा दान ॥ ३ ॥
वंश सुवर इक्ष्वाकु मैं, भये चन्द्रमा आप ।
पुरी अजोध्या जननका, दूर भया संताप ॥ ४ ॥
हेम वरण तन सोहनो, गजका चिन्ह सुहाय ।
सार्द्ध चारसत धनुपकी, उन्नत प्रभु की काय ॥ ५ ॥
पूरव ठारह लाखमें, युवा अवस्था पाय ।

पूर्व तरेपन लाख प्रभु, किया राज सुखदाय ॥ ६ ॥
माघ सुकल दशमी दिवस, झूठा सब जग जान ।
राजभोग सब छांड कर, धरा आपने ध्यान ॥ ७ ॥
काटे शुक्ल सुध्यानतैं, चारो घाति महान ।
पौष शुकल एकादशी, प्रगटा केवलज्ञान ॥ ८ ॥
समवशरण द्वादश सभा, रचि धनपतिने सार ।
पाहिली मुंनिजन दूसरी, कल्प देवता नौर ॥ ९ ॥
सौध्वी गण अर श्राविका, गण तीजी विख्यात ।
चौथी पंचम नारियां, जोतिॆष विंतर जात ॥ १० ॥
छट्टी भावन देवियां, सप्तम भावन देव ।
अष्टम नवमीमें करैं, व्यंतर जोतिषे सेव ॥ ११ ॥

दशमी वैमानिक सभा, मनुष्य ग्यारवी मांहि ।
सभा वारवीके विषै, पशु गण वैठे आहि ॥ १२ ॥
इसप्रकार द्वादश सभा, भई जगत विख्यात ।
तिन विच गंध कुटी विषैं, राजत तुम जग तात ॥ १३ ॥
दिव्य ध्वनि भइ नाथ की, सर्व अर्थ मय सार ।
सर्व लोककी हित करी, भया जगत उपकार ॥ १४ ॥
लाख पूर्व रह योगमें, सम्मेदाचल शीश ।
चैत सुकल तिथि पंचमी, भये मुक्तिके ईश ॥ १५ ॥
सकल जगतको जीतकर, भये कर्म वलवंत ।
जीत सके नहिं आपको, यातें अजित कहंत ॥ १६ ॥
जनम मरणके दुःखतें, "हीरा" अति भय वान ।

शरण आपकी आपडा, बेग करो कल्यान ॥ १७ ॥

ओं ह्रीं अजितनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ संभवनाथजीकी पूजा ।

चाल आसावरी ।

श्री संभव जिनको कर प्रणाम, मैं पूजूं पाऊं मुक्ति धाम (टेर)
छांडा ग्रैवेयक हे जिनेश, सित फागुण अष्टमि हे महेश ॥ १ ॥
श्रावस्ती नृप दृढरथ सुजान, तिनकी महिषी उर वसे आन ।
कातिक अंतिम दिन जन्म आप, सव दूर करण संसार ताप ॥ २ ॥
माता सेना लखि वदन चंद, आशिष दीनी चिर जीव नंद ।
पंदरह लख पूरव रह कुमार, हो युवा लिया पितु राज भार ॥ ॥
किया राज जगतमें नीति थाप, लख चवालीस पूरव सु आप ।

मगसिर पूरणमासी जिनेश, तप उत्सव कीना आ सुरेस ॥ ४ ॥
भई तपश्चरण महिमा अपार, श्री संभव तुमको नमस्कार ।
वदि कातिक चौदस तिथि विशाल, भया केवल टूटे कर्म जाल ॥५॥
रचि समवसरण विधि देव आय, ताकी महिमा वरणी न जाय ।
रह लक्ष पूर्व अनगार आप, स्याद्वाद न्याय कर धर्म थाप ॥ ६ ॥
सित षष्ठि चैतकी हे मुनीश, सम्मेद थकी भये मुक्ति ईश ।
तुम चरण चिन्ह घोटक लखाय, धनु चार शतक शुभ हेम काय ॥७॥
तुम गुण गणको नहिं छेवदेव, सुरनर मुनिजन सब करत सेव ।
मैं वंदों तुमपद बार बार, भव सागरतैं मोहि तार तार ॥ ८ ॥

दोहा।

संभव जिनके अतुल गुन, को कवि करै वखान ।
'हीरा' भक्ति प्रसादतैं, पावै मोक्ष निधान ॥

ओं ह्रीं संभवनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ अभिनंदनजी

चाल चौपई।

श्री आभिनंदन जिनवर ध्याऊं वंदन कर आति भक्ति वढाऊं।
सित वैसाख षष्ठि जिनराई विजय विमान छोड सुखदाई ॥ १ ॥
सिद्धार्था जननी उर आये संवर भूप अयोध्या जाये।
माघ शुकल वारस हे त्राता जनम भयो तुम जग विख्याता ॥ २
हेमवर्ण तन छवि आति सोहै कपि लक्षण सवके मन मोहै।
जन्म महोत्सव हे जिनराई कीनो सुरपति हर्ष वढाई ॥ ३ ॥

दोहा।

वाल अवस्था त्याग प्रभु राज्य पिताका पाय।
सुख मय कीना जगतको नीति धर्म वतलाय ॥ ४ ॥

राज संपदा भोगकर वहुत काल सुखरास ।
इन्द्रिय सुख दुख जानकर जगतैं भये उदास ॥ ५ ॥

चाल चौपई

सब जग वस्तु अथिर प्रभु जानी, तप इच्छा निज मनमैंठानी ।
वारह भावन जब प्रभु भाये, तब लौकांतिक सुर मिल आये ॥६॥
जन्म दिवसहीको तप लीना, सुरनर मिल तप उत्सव कीना ।
ज्ञानावरणादिक दुख दाई, इतने आतम ज्योति न पाई ॥ ७ ॥
वेला शुभ अपराह्न सुहाई, ता वर प्रभुने घाति नसाई ।
पोष सुकल चौदस सुखदाई, केवल ज्ञान लह्यो जिनराई॥ ८ ॥

दोहा

समोशरण मैं आपके, गणधर इकसौतीन ।
वारह सैहसरु डेढसो, मन पर्यय परवीन ॥ ९ ॥

केवलि सोले सहस अरु, प्रति गणधर लखतीन ।
नोसहसअरुआठसौ, श्रुत अवधी निज-लीन ॥ १० ॥
शिक्षक पंचासत उपरि, दो लख तीस हजार ।
पूरव धर पच्चीससौ, बादी ग्यारे हजार ॥ ११ ॥
वैक्रिय सहस गुनीसअरु, श्रावक थे त्रयलाख ।
भई श्राविका पंच लख, जिनवाणीकी साख ॥ १२ ॥
तीनलाख त्रिंसत सहस, छेहसौ ऊपर जान ।
भई आर्यका संगमैं, तुमरे हे भगवान ॥ १३ ॥
पूर्व लाख पंचासकी, आयु भई सुखदाय ।
सार्द्ध तीन सत धनुषकी, उन्नत प्रभुकी काय ॥ १४ ॥

चाल चौपई ।

सुदि वैसाख षष्ठि जिनराई । तादिन तुम पंचम गति पाई ॥

गिरि समेद पर आनंद कूटा, कर्म अघाति तहां पर छूटा॥ ५॥
मोक्ष गये तहांतै मुनिराई, तिनकी संख्या आगम गाई ।
कोडा कोडी तीस सुजानो, तापर सत्तर कोड वखानो॥ ६ ॥
लक्ष सप्त अरु सहस बियाला, सात सतक वंदू मुनि माला ।
अभिनंदन आनंद अतिकीजे, अभयथान 'हीरा'को दीजे॥१७॥

दोहा ।

अष्ट द्रव्यको लेयकर पूज करी गुणधाम ।
अभिनंदन तुम चरणको पुनि पुनि करो प्रणाम ॥ १८ ॥

ओं ह्रीं अभिनंदनजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ सुमतिनाथजी ।

चाल चौपाई ।

पंच कल्याण सुमति प्रभु पाये, पूजूं ध्यावूं मन वच काये ।

वैजयंत तजकर जिनराई, सित सावण दोयज सुखदाई ॥ १ ॥
मात मंगला उरमें आये, मेघप्रभके पुत्र कहाये ।
चैत्र शुक्ल एकादशि स्वामी, जन्मे तुम त्रिभुवनमें नामी ॥२॥
नगर अयोध्याके नरनारी, किया महोत्सव अति सुखकारी ।
सुदि नवमी वैशाख सुहाई, ता दिन प्रभु तप-लक्ष्मी पाई ॥ ३ ॥
चैत्र पूर्णिमा तिथि सुखदानी, आप भये प्रभु केवल ज्ञानी ।
समोशरण धनपति आ कीना, द्वादशसभा तहां रच दीना॥ ४ ॥

दोहा

गंध कुटी के वीच में, राजत आप जिनेश ।
हेमवर्ण छवि यों दिपे, मानों कोटि दिनेश ॥ ५ ॥
दिव्यध्वनि मुख तें खिरी, गणधर प्रश्न वसाय ।

नय प्रमाण निक्षेप अरु, सप्त तत्त्व दरसाय ॥ ६ ॥

नव पदार्थ षट द्रव्य पुनि, अस्ति काय हैं पांच ।
काल तीन गुपती त्रयी, सुमति पांच व्रत पांच ॥ ७ ॥

द्वादश तप अरु भावना, पंचा .र महान ।
उत्तर गुण अरु मूल गुण, और च्यारविध ध्यान ॥ ८ ॥

दश लक्षण है धर्म अरु, रत्नत्रय सुख दाय ।
सोलह कारण भावना, तीर्थंकर पद दाय ॥ ९ ॥

इत्यादिक वहु भेद युत, सत्यधर्म समझाय ।
कुमति हरी सव जगत की, तातैं सुमति कहाय ॥ १० ॥

काय तीनसो धनुषकी, चकवा चिन्ह लखाय ।
पूर्व लक्ष चालीसकी, भई आपकी आय ॥ ११ ॥

चैत्र शुक्ल ग्यारस दिवस, गिरि समेदके शीश।
मुक्ति भये हे नाथ तुम, नमौं नमौं जगदीश ॥ १२ ॥
सुमति मुझे अब दीजये, सुमतिनाथ महाराज।
अब विलंब नहिं कीजये, "हीरा" हितके काज ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं सुमतिनाथजिनेंद्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पद्म प्रभुजी

दोहा

उपरिम ग्रैवकतैं चये, कौशांवी पुर आय।
माघ कृष्ण छिट गर्भमैं, आये श्री जिनराय ॥ १ ॥
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, लीनौं जन्म धराय।
धारण नृप तुम पितु भये, भई सुसीमा माय ॥ २ ॥

कार्तिक सुदि तेरस दिवस, धार्यो तप वन जाय ।
तेला थाणा आपने, निश्चल ध्यान लगाय ॥ ३ ॥
मंगलपुरके नृपति वर, सोसदत्त घर जाय ।
किया अशन प्रभु आपने, सब जनको सुखदाय ॥ ४ ॥
चैत्रमासकी पूर्णिमा, केवल ज्ञान उपाय ।
लोकालोकविलोकके, धर्म स्वरूप बताय ॥ ५ ॥
फागुण कृष्णा चौथको, गिरि समेद पर जाय ।
मुक्त लही प्रभु आपने, पूजूं अर्घ चढाय ॥ ६ ॥
रक्त वर्ण प्रभु आपका, चिन्ह सुपद्म लखाय ।
द्वैसो धनु काय अरु, पूर्व तीस लख आय ॥ ७ ॥
मो किंकरकी वीनती, सुनिये श्री जिनराय ।

भव भवमें तेरा शरण, पावूं मैं सुखदाय ॥ ८ ॥
भक्ति भाव मम उर वढ्यो, आयो मन हुलसाय ।
'हीरा' अपने भक्तको, लीजो चरण लगाय ॥ ९ ॥
पद्म नाथ युग चरणको, जो पूजै मन लाय ।
सुख संपति सब भोग कर, भव सागर तिर जाय ॥ १० ॥

ओंह्रीं पद्मप्रभुजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ सुपार्श्वनाथजी

चाल सरंग

दृढ मनसे सुपार्श्वका शरण लिया (टेर)
मध्यम ग्रैवेकसे आकर नगर वनारस स्थान किया ।
शुकल भादवा षष्ठि गर्भ दिन जेठ द्वादशी जन्म लिया ॥ १ ॥

पृथिवी देवी मात तिहारी सुप्रतिष्ठ नृप तात भया ।
हरित वर्ण भइ देह आपकी स्वस्तिक लञ्छन धार लिया ॥ २ ॥
वीस लाख पूरवकी आयू धनुष दोय सौ काय भया ।
जन्म दिवसको दीक्षा धारी तेलेका व्रत धार लिया ॥ ३ ॥
पाडल पुर नगरी के माहीं नृप महेन्द्र घर अशन भया ।
फागुण वदि छिट घाति नाशकर केवल ज्ञान उपाय लिया ॥४॥
फागुण वदि सातैं शुभ तिथिमें गिर समेदसे मोक्ष भया ।
सुरनर मुनि सब मिलकर आये पूजा करके लाभ लिया ॥ ५ ॥

दोहा ।

लख चौरासी योनिमें, बहुत सही मैं त्रास ।
जन्म मरण करता फिरा, टारहु वर प्रति स्वास ॥ ६ ॥

नित निगोद की सात लख, सात इतर की जान ।
भूजल तेजरु वायु की, सात सात ही मान ॥ ७ ॥
दश लख है तरु कायकी, चौदह मनुज सुजान ।
देव पशू अरु नारकी, चार चार लख ठान ॥ ८ ॥
विकलेन्द्रियकी लाख छह, सब चौ॰ासी लाख ।
कुल कोडी है एकसो, साढ निनणवें लाख ॥ ९ ॥
इनमै भ्रमता हे प्रभू, मैं आ॰या तुम पास ।
'हीरा' को निज दास लख, त॰रो नाथ सुपास ॥ १० ॥
ओंह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ चन्द्रप्रभुजी ।

चालमांड ।

हो चंदा प्रभु स्वामी मोहे उवारो चहुगति त्रासते (टेर)

श्रीवर्मानृप प्रथम भये फिर, प्रथम स्वर्ग भये देवें ।
अैजितसेन छहखंडी नृपह्वे, भोगे भोग अछेव ॥
अच्युतें इन्द्र पद पाय भये, प्रभु पैदमनाभ भूपाल ।
वैजंयंत में पहुंचे फिर जिन, किये भोग बहुकाल ॥
किये भोग बहुकाल, जनम मृतुना टरा ।
ताके टारन काज, तीर्थंकर पद धरा ॥ १ ॥
चंद्रपुरी में चन्द्र अनोखे, उदय भये प्रभु आप ।
संसारी जीवनका तुमने, मेटा जग संताप ॥
महासेन नृप तात तिहारे, भई लक्ष्मणा माय ।
चैत पंचमी असित पक्षको, बसे गर्भमें आय ॥
बसे गर्भमें आय, जगत आनंदभया ।

छपंन कुमारी देवि, मात सेवन किया ॥ २ ॥
जनम पौषबदि ग्यारस पाया, भये मंगलाचार ।
उत्सव आ देवोने कीना, मात पिताके द्वार ।
इन्द्राणी प्रसूति घर जाकर, लाई गोद उठाय ॥
ऐरावति हस्ती पर तुमको, लीने इन्द्र विठाय ।
लीने इन्द्र विठाय, शब्द जय जय हुए ।
पांडु शिला लेजाय, थाप तुमको दिये ॥ ३ ॥
सहस अटोतर कलश लायकर, किया जन्म अभिषेक ।
इन्द्राणी शृंगार किया पुनि, करके बहुत विवेक ॥
द्रम द्रम द्रम गन्धर्व सुरोंने, धुनि मृदंगकी कीन ।
झननन झननन झांझ वजाई, और बांसरी बीन ॥

और वांसरी वीन, साज सब साजिया ।
साढे बारहकोड, सुवाजा वाजिया ॥ ४ ॥
कर उत्सव सुर पुरमें लाये, किया सुतांडव नृत्य ।
देख कल्याणक जन्म आपका, हुये सभी कृत कृत्य ॥
उत्सव कीना मात पिताने, दिया किमिच्छक दान ।
रहा न याचक पुरके मांही, किया सकल सनमान ॥
किया सकल सनमान, धन्य जिन जन्मये ।
अतिशय पुन्य उपाय, देव सुर पुर गये ॥ ५ ॥
दश लख पूरव आयू धारी, धनुष डेढसो काय ।
चरणन चिन्ह चन्द्रमा सोहे, चन्द्र वर्ण जिनराय ॥
राज अखंड किया जग माही, प्रजापाल हितकार ।

हुई अरुचि जब राज भोग से, तपका हुवा विचार ॥
तपका हुवा विचार लौकान्तिक आ गये ।
निज नियोग को साध थान अपने गये ॥ ६ ॥
जब तप धरने आप पधारे, सुरनर मुनि भये साथ ।
विठा पालकी नृप विद्याधर, लेगये हाथों हाथ ॥
देवोंने फिर गही पालकी, अपनी अपनी वार ।
जब पहुंचे प्रभु वन के मांही, भूषण वसन उतार ॥
भूषण वसन उतार, लौंच तुमने किया ।
जन्म तिथी शुभ पाय, आप तप धर लिया ॥
मन पर्यय प्रभु ज्ञान लहाया, जोगासन लिया धार ।
तेलाव्रत कर पारण कीना, पद्मखंड नृप द्वार ॥

पंचाश्चर्य दानपतिके घर, भये गगनतैं सार ।
रत्नपुष्प गंधोदक वरषे मंद सुगंध वयार ॥
मंद सुगंध वयार, दुंदुभिध्वनि भई ।
दानपती नृप चन्द्रदत्त, भये सुखमई ॥
लख रचना यह कई जनोंने, मुनि पदवीली धार ।
वारह विधि तप तुम संग कीना, सहा परीषह भार ॥
तीन मास छद्मस्थ रहे फिर, घाति कर्म दिये मार ।
शुक्लध्यानप्रभाव आपके, उपजा केवल सार ॥
उपजा केवल सार. अतुल महिमा भई ।
फागुण कृष्णा साते, तिथि शुभ वरणई ॥
दोष अठारह दूर गये सारे, गुण छियालिस प्रगटाय ।

प्रातिहार्य वसु प्रगट भये अरु, अर्हंत पद लिया पाय ॥
समवशरण की रचना राची, राजत श्री भगवान ।
सभा जु द्वादश जुरी मनोहर, किया धर्म व्याख्यान ॥
किया धर्म व्याख्यान, अंग द्वादश कहे ।
गणधरादि ने समझ, ताहि धारण किये ॥
अक्षर रहित भई जिन वाणी, सकल जीव समझाय ।
होठ तालु नहि हिले प्रभूके, सब जीवन सुखदाय ॥
लक्ष पूर्व समवसृति युत रह, गिर समेद पर जाय ।
योग निरोध किया प्रभु तहां पर, चार अघाति नशाय ॥
च्यार अघाति नशाय, वास शिव पुर किया ।
केवल तिथि को मोक्ष, महा फल पा लिया ॥

चहुं गत भोगी लख चोरासी, कर्मन की सहि त्रास ।
भव सागरसे मोय उवारो, पूरो मनकी आस ॥
दो कर जोड़ूं शीश नमांवू पूजूं वारम्वार ।
लक्ष्मण सुत "हीरा" शरणे आया, वेग उतारो पार ॥
वेग उतारो पार, दीनके नाथ हो ।
अधम उधारण चन्द्रनाथ विख्यात हो ॥
ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

——:o:——

अथ पुष्पदंतजी ।

चाल मांड ।

पुष्पदंत भगवान नमूं मैं मनवच तनसेंजी ।
कर्मशत्रु द्यो टार नमूं मैं मनवचतनसेंजी ॥ टेर ॥

फागुण वदि नवमी दिवस, आरण दिवतैं आय।
रामा देवी उर वसे, काकिंदा पुर माय ॥ १ ॥
मगासिर सुदि राके दिवस, जनमे श्री भगवान।
नृपति वर्य सुग्रीव घर, वटा किमिच्छक दान ॥ २ ॥
युवा होय पितुराज्य पर, भोगे भोग अपार।
राज त्याग तिथि जन्मको, लिई तपस्या धार ॥ ३ ॥
पंच महाव्रत नग्नता, सुमाति पांच परकार।
षट आवश्यक भूशयन, केसलौंच सुखकार ॥ ४ ॥
पंचेंद्रीका दमन अरु, दन्त धवनका त्याग।
स्नान त्याग इक भुक्ति अरु, खडे हार विनराग ॥ ५ ॥
यह ठाइसौं मूल गुण, अरु उत्तर गुण भेद।

चौरासी लख जानकर, पाले प्रभु विन खेद ॥ ६ ॥
कातिक सुदि दोयज तिथी, किये घातिया नाश ।
केवल ज्ञान उपायके, कीया धरम प्रकाश ॥ ७ ॥
चंद्रवर्ण तन सोहनो, मकर चिन्ह सुखदाय ।
काय धनुष शतकी धरी, दो लख पूरव आय ॥ ८ ॥
भ.दों सुदि आठैं दिवस, च्यार अघाती नास ।
गिरि समेदतैं हे प्रभू, कीना शिवपुर वास ॥ ९ ॥
'हीरालाल' की वीनती, सुनिये श्री जिनराय ।
कर्मरोगको मेटिये, पूजूं तुमरे पाय ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



अथ शीतलनाथजी ।–

चाल मांड ।

शीतलता मोये कीजिये, भवदाह मिटाकर (टेर)
चैत कृष्णकी आठैं तिथिको, अच्युतदिवतैं आये ।
भद्दलपुरमैं मातसुनंदा, दृढरथ पिता कहाये जी ॥१॥
माघ कृष्ण वारस शुभ तिथिमैं, जन्म आपने पाया ।
पूर्वाषाढरु धनुषलग्नमैं, जगविच आनंद छायाजी ॥२॥
महा वदि वारस होय दिगम्बर, तपरस मांही भीने ।
तीन वरस छद्मस्थ रहे फिर, घातिकर्म क्षय कीनेजी ॥३॥
पोष कृष्ण चोदस शुभतिथिमें, केवल ज्ञान उपायो ।
कर विहार भव्य वहु वोधे, जगमैं ज्ञान बढायोजी ॥४॥
सुदि आठै आसोज मासमैं, कर्म अघाति नंशाया ।

लघु अक्षर परिमाण कालमैं, निःबाध पद पायाजी ॥५॥
नित निगोदमें काल अनंता, कर्मोंने दुख दीने ।
एक स्वासमैं ठारे ठारे, जन्म मरण हम कीनेजी ॥६॥
फेर निकल व्यवहार राशिमैं, क.क तालिवत आयो ।
एकेन्द्रिय तन धर थावरमैं, काल अनंत गमायोजी ॥७॥
काललब्धितैं त्रस भी होकर, त्रिकलत्रय तन धारयो ।
वचन अगोचर दुःख सहे तहां, सुमरन हृदय विदारयोजी ॥८॥
पंचेन्द्री हो भये असैनी, मन विन ज्ञान न पायो ।
मन भी पाय दीन पशुगतिमैं, अज आदिक उपजायोजी ॥९॥
क्रूर जनोंने हे जिन मम तन, काट काट कर खायो ।
पकड पकड अथवा जीवितको, अग्नी मांहि जलायोजी ॥१०॥

इत्यादिक अगणित पशुगतिदुख, कहत अन्त नाहिं आई ।
छेदन भेदन मारन ताडन, भार वहन दुख दाईजी ॥११॥
सिंह व्याघ्र आदिक हो मैने, दीन पशुनको सताये ।
चीर फाड कर उनको खाये, वहु विध पाप उपायेजी ॥ १२ ॥
ताफल मर कर गयो नरकमें, अशुभ उदय अति आयो ।
याद करत मुझ हृदय फटत है दुःख अनन्ता पायोजी ॥ १३ ॥
क्रूर नारकी देख नये मुझ, दौड दौड कर आये ।
मार मार कर मेरे तनके, तिल तिल खंड करायेजी ॥ १४ ॥
बार बार शूली पर दीनो, नाना दुःख दिखायो ।
सर्प व्याघ्र आदिकवन मुझ तन, तोड २ कर खायोजी ॥ १५ ॥
इत्यादिक दुख सहे निरंतर, त्रास वहुत मैं पायो ।

काल असंख्य नाथ नरकोंमें, क्षणिक चैन नहि आयोजी ॥ १६ ॥
अशुभ कर्मके मंद होनतें, मानुप भवमें आयो ।
नीच दरिद्री कुलमें उपज्यो, तहां भी अति दुख पायोजी ॥ १७ ॥
देव योगतें पाय उच्चकुल, मदमें आतम भुलायो ।
इष्ट अनिष्ट वियोग योगमें, व्याकुल है दुख पायोजी ॥ १८ ॥
मंद कषाय आदि कारणतें, सुरगतिमें उपजायो ।
नारि वियोग आदितें वहांभी, रो रोकर विलखायोजी ॥ १९ ॥
परका विभव देख प्रभु मनमें, ईर्षा भाव वढायो ।
वाहन वन कर सेवा कीनी, सुरभी वन पछतायोजी ॥ २० ॥
या प्रकार मैं काल अनन्ता, चतुर्गती भरमायो ।
दुःख निरंतर सहत सहत अव, शरण आपकी आयोजी ॥ २१ ॥

वेग हरो यह भ्रमण नाथ अव, मैंनें वहु दुख पायो ।
'हीरा' की प्रभु अरज यही है, चरणन शीश नमायोजी ॥२२॥

दोहा

हेम वर्ण अति सोहनो, निव्वे धनु की काय ।
श्रेष्ठ चिन्ह श्रीवत्स अर लक्ष पूर्व की आय ॥
भवाताप नश जात हैं, तुम पूजत जिनराज ।
यातैं शीतल आपको, कहत सकल गणराज ॥

ओंह्रीं श्री शीतलनाथजिनेंद्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ श्रेयांसनाथजी ।

चाल मांड ।

श्रेयांसनाथ महाराज, नैया पार लगानेवाले (टेर)

तुम विमल भूपके प्यारे, माता विमलाके मन हारे ।
थे सिंहपुरी के राजा, कुल इक्ष्वाकु दिपानेवाले ॥ १ ॥
माताने स्वप्न लखाये, वदि जेठ षाष्ठ उर आये ।
पुष्पोत्तर तुमने छोडा, जगके दुःख मिटाने वाले ॥२॥
वदि फागुण ग्यारस जनमे, भया हर्ष सबके मनमे ।
आये देव महोत्सव करने, तीनू ज्ञान धरानेवाले ॥३॥
शुभ फागुण वदि ग्यारसको, तप धरा कर्म नाशनको ।
अनुप्रेक्षा द्वादश भाई, तप द्वादश तपनेवाले ॥४॥
तिथि माघ अमावस आई, तुम केवल लक्ष्मी पाई ।
गुण छियालीस प्रगटाये, तत्त्व ज्ञान बताने वाले ॥५॥
तन अस्सी धनुष ऊंचाई, लक्षण गैंडेका सुखदाई ।
वय वरस लाख चोरासी, कांचन कान्ति युक्त तनवाले ॥

दिन सावन अन्तिम आया, तब मोक्ष महा फल पाया ।
भये निराकार अविकारी, सदगुण आठ धरानेवाले ॥७॥
मेरे अष्ट कर्म निरवारण, अब आप मिले शुभ कारण ।
स्वामी तुम हो अधम उधारण, मेरी आशपूरणेवाले ॥८॥
मो मनमें हर्ष बढाया, ले अष्ट द्रव्य यहां आया ।
"हीरा" नाच नाच गुण गाया, हो तुम मुक्ति पठानेवाले ॥९॥

ॐह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ वासपूज्यजी चाल अडिल्ल ।

वासपूज्य जिनबालब्रह्मचारी भये, जिनके पंचकल्याण एकपुरही भये । महाशुक्रको छांड नगर चंपापुरी, नृपतिवर्य वसुपूज्य पराक्रम केशरी जयावती तिनप्रिया गर्भप्रभु अवतरे, बदिअषाढ़ तिथिषष्टि सकल जन सुख भरे ॥ फाल्गुण चौदस कृष्ण जन्म प्रभुने लिया । अरुण वरण छवि देख जगत मोहित भया ॥

इन्द्रादिक सुर आय मेरुपै लेगये,
करि अभिषेक जिनेश सुखी मनमें भये ॥२॥
पुनर वार आ नगर मांहि उत्सव किये,
मात पिताको पूज थान अपने गये ॥
बाल चंद्रवत बढत युवा जब जिन भये,
अति प्रसन्नमुख कमल देख सब सिरनये ॥३॥
तीन लोकको जीत जगत विजयी भया,
ऐसा भी बलवान काम प्रभु बस किया ।
दुःखरूप यह जगत नाथने जानके
संयम लीना जन्म तिथी वन आनके ॥४॥
द्वादश विधि तप किया परीषह सब सहे ।

रागादिकको त्याग कर्म इस विधि दहे ॥
चोथे गुणतैं सप्तम तक इम क्षय करी ।
नरक और तिर्यंच आयु द्वय दुख भरी ॥५॥
मिथ्यात्वादिक सप्त मोहकी जानये,
देव आयुको मिला प्रकृति दश मानये ।
अष्टममें चढ नवम थानमें थिर भये,
कर्मप्रकृति इम नाश ध्यान निश्चल किये ॥६॥
नरकगती नरकानुपूर्वी मामये,
तिर्यकगति तिर्यगानुपूर्वी जानये ।
विकलत्रय अरु स्त्यानगृद्धित्रिक क्षय किया,
आतप अरु उद्योत एक इन्द्रिय गया ॥७॥

साधारण थावर अरु सूक्षम क्षय करे,
मध्यम आठ कषाय वेद द्वय भी हरे ।
छै हास्यादिक नाश वेद पुंनाशिया,
क्रोध मान माया मिल आगम भासिया ॥८॥
छत्तीस प्रकृति यह नाश दशम गुणमें गये,
लोभ प्रकृति वहां चूर चारित निर्मल किये ।
ग्यारम गुण उल्लंघि बारमे थिर भये,
ज्ञानावरणी पांच विघ्न पंच क्षय किये ॥९॥
चक्षु अचक्षू अवधी केवल दर्शना,
वरण च्यार अरु निद्रा प्रचला भी गिना ।
सोल प्रकृति यह नाश त्रयोदसमें गये,

शुक्ल माघकी दोज केवली जिन भये ॥१०॥
कर विहार जगमांहि प्रगट शिव मग किया,
आयु शेषके समय स्थान चौदस लिया।
प्रकृति पिच्यासी ततक्षण ही प्रभु क्षयकरी,
भाद्र चतुर्दशी शुक्ल वरी शिव सुंदरी ॥११॥
प्रथम बालब्रह्मचारी तुमको जानके,
मुक्ति गमन दिन तुमरा अति शुभ मानके।
प्रोषध व्रत धर ब्रह्मचर्य सब पालते,
दश लक्षणमें ब्रह्मचर्य दिन मानते ॥१२॥

दोहा।

लक्ष बहत्तर वर्षकी, भई आपकी आय।

महिष चिन्ह तुम चरणमें, सत्तर धनुकी काय ॥ १३ ॥
वंश जु वर इक्ष्वाकुमें, द्वादशवें तीर्थेश ।
"हीरा" याचत है यही, काटो कर्म कलेश ॥ १४ ॥

ओं ह्रीं श्रीवासपुज्यजिनेंद्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

——·•:——

अथ विमलनाथजी ।

चाल मरैठो ।

विमल जिनेश्वर नमत सुरेश्वर चरण कमल पूजूं तेरे ।
मन वच तनतें शरण तिहारी, हरो कर्म वसु विधि मेरे (टेर)
सहस्रार स्वर्गतें चयकर, जेठ कृष्ण दशमी दिनको ।
मात सुरम्या उरमें आये, हर्ष भया सबही जनको ॥१॥
माघ चोथ सित पखमें जनमे, जगमें ज्ञान प्रकाशनको ।

नृपकृतधर्म भये अति हर्षित, पाकर त्रिभुवनपति सुतको॥२॥
लक्ष पंचदश वरस बालपन, वरस तीस लख राज किया।
जन्म तिथी दिन कारण पाकर, राज छांड वैराग लिया ॥३॥
वरस तीन छद्मस्थ रहे फिर, घाति चतुष्टय नष्ट किया।
माघ सुकल षष्ठी तिथिको तुम, केवल ज्ञान उपाय लिया॥४॥
वरस तीन कम लक्ष पंचदश कर विहार सब देशनमें।
दे उपदेश भव्य बहु तारे, पहुंचाये श्रीशिवपुरमें ॥ ५ ॥
वदि अषाढ आठैंको प्रभुने, सर्व कर्म चकचूर किये।
जग असार यह त्याग दिया, अरु गिरि समेदतें मोक्ष गये ॥६॥
रागादिक सव दूर भये अरु, अष्ट कर्म मल दूर गये।
सकल आतमगुण प्रगट भये जिन, विमलनाथ तुम सिद्ध भये ७

दोहा।

चिन्ह वराह रु हेमछवि, साठ धनुषकी काय।
पुरी कंपिला ईश जिन, वर्ष साठ लख आय ॥ ८ ॥
भ्रमत भ्रमत अति दुखित हो, आयो तुम दरबार।
"हीरा" याचत है यही, करिये भवदधि पार ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तये ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ अनंतनाथजी।

चाल फागोको होलो।

अनंतनाथ जिनराई, पूजूं मन वच काई (टेर)
पुष्पोत्तरसे प्रभु तुम आये, पुरी अजोध्या मांही।
सिंहसेन नृप तात तिहारे, सर्वयसा भइ माई ॥
सोलह स्वप्न लखाई ॥ १ ॥

कातिक वदि राके शुभ आई, तादिन गर्भ धराई ।
जेठवदी वारस शुभ दिनमें, जनम लिया जिनराई ॥
सब जग वटी बध ई ॥ २ ॥

देव देवियां सब मिल आकर, जन्म कल्याण कराई ।
वरस तीस लख आयू धारी, धनु पचासकी काई ॥
सेही चिन्ह धराई ॥ ३ ॥

जन्म तिथीको ही प्रभु तुमने, वारह भावन भाई ।
जाय महावन धरी तपस्या, धन्य धन्य जिनराई ॥
शीघ्र प्रभु घाति नशाई ॥ ४ ॥

चैत वदी मावसको प्रभु तुम, केवल ज्ञान लहाई ।
धर्म वताया दस लक्षण मय, सोलह कारण गाई ॥

रत्नत्रय समझाई—॥ ५ ॥

गिर समेद पर ज्ञान तिथीको, मुक्ति आपने पाई।
सुरनर मुनि जन सब मिल आये, चरणों शीश नमाई ॥

मंगल गान कराई —॥ ६ ॥

अष्ट द्रव्य ले पूजन आया, घननन घंट बजाई।
वीन बांसरी ताल मजीरा, झननन झांझ बजाई ॥

छिम छिम नृत्य कराई—॥ ७ ॥

भव भव भ्रमता "हीरा" आया, भक्ति भाव उर लाई।
भवबाधा मेरी आप नशावो, हेत्रिभुवन पति राई ॥

नांच नांच गुनगाई—॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्री अनंतनाथजिनेंद्र प पंच कल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ धर्मनाथजी।

चाल।

भगवान धर्म नाथके, चरणोंमें चितगया।
दुःख रोग शोक पाप, ताप दूर सब भया॥
सर्वार्थ-सिद्धतैं चये, नृप भानुकी प्रिया।
शुभनाम सुव्रताके उर, अवतार आ लिया॥
त्रयोदशी वैशाख कृष्ण, गर्भ दिन भया।
सुदि माघकी त्रयोदशीमैं, जन्म जिन लिया॥
बहुकाल राज्य सौख्य भोग, त्याग सव दिया।
तिथि जन्म की जिनेश, वनमें जाय तप लिया॥
शुभ पौष शुक्ल पूर्णिमा, सव घाति नाशिया।
कल्याण ज्ञान नाथका, सुर गणनें आ किया॥

उपदेश समवसरणमैं, जिननाथने दिया ।
जिनधर्मका स्वरूप, इस प्रकार वरणया ॥

दोहा ।

सम्यक दर्शन ज्ञान अरु, निर्मल चारित जान ।
रत्नत्रय यह जीवके, निज स्वभाव पहिचान ॥ १ ॥
उत्तम क्षमा सु सत्य अरु, मार्दव आर्जव मान ।
संयम शौचरु त्याग तप, आर्किंचन गुणखान ॥ २ ॥
ब्रह्मचर्य यह दश कहे, श्रेष्ठ धर्मके भेद ।
इनको पालत जे मुनी, करत कर्म सब छेद ॥ ३ ॥
पंच महाव्रत गुप्ति त्रय, समिती पांच प्रकार ।
मुनिवर धर्म सु वरणया, तेरह विधि जगसार ॥ ४ ॥

अणु व्रत पंचरु चार है, शिक्षाव्रत सुखकार ।
त्रय गुण व्रत प्रभुने कहे, श्रावक व्रत गुणकार ॥ ५ ॥
इत्यादिक बहु भेद युत, सत्य धर्म दरशाय ।
धर्मनाथ प्रभु तुम भये, यातैं पूजूं पाय ॥ ६॥
शेष कर्म सब नाशकर, भये मुक्तिके ईश ।
जेष्ठ शुक्लकी चोथ दिन, बंदत सकल मुनीश ॥ ७ ॥
जन्म थान रतनांग पुर, कनक वर्ण जिनराय ।
आयु वर्ष दश लाखकी, बज्र चिन्ह सुखदाय ॥ ८ ॥
पंच और चालीस धनु, उन्नत प्रभुकी काय ।
दर्शक जन चितको हरे, 'हीरा' वंदत आय ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मथ शांतिनाथ स्वामी ।

चाल ।

श्री शान्ति नाथ स्वामी, भव दाहको मिटावो ।
दे शान्ति पूर्ण दर्शन, शुभ शांति रस पिलावो ॥ टेर ॥
सर्वार्थ सिद्धि तजकर, पुर हस्तिनाग स्वामिन् ।
एराके गरभ आये, वदि भाद्र सप्तमी दिन ॥ १ ॥
हुवा जन्म दिन मनोहर, शुभ जेष्ठ कृष्ण चौदस ।
नृप विश्वसेन घरमें, छाया प्रमोदका रस ॥ २ ॥
तीर्थेश काम चक्री, पद तीन आप पाये ।
छे खंड साध पृथिवी, नृपगण सभी नमाये ॥ ३ ॥
गृह स्वामि हस्ति वनिता, सेनापती पुरोहित ।

शुभ अश्व शिल्पि चेतन, करते जगतको मोहित ॥ ४ ॥
था चक्र शुभ सुदर्शन, अरु खड्गपति सुनंदन ।
शुभ छत्र दंड चामर, मणि काकिणी रतन गिन ॥ ५ ॥
निर्जीव सप्त यह मिल, चोदह रतन भये जिन ।
अति पुन्यसे ही मिलते, मिलते न पुन्यके विन ॥ ६ ॥
निधि काल पांडु पिंगल, नैसर्प संख पद्मा ।
मानव अनेकरत्ना, महाकाल नाम नवमा, ॥ ७ ॥
इक एक रत्न निधिके, इक इक हजार देवा ।
होके नियोग तत्पर, करते थे नित्य सेवा ॥ ८ ॥
वत्तीससहस रक्षक, ठारह किरोड घोडे ।
वत्तीस सहस राजा, रहते थे हाथ जोडे ॥ ९ ॥

चौरासी कोड प्यादे, चौरासीलाख गज वर ।
चौरासी लाख रथ थे, गो तीनलाख सुन्दर ॥ १० ॥

छिनवे हजार राणी, सौंदर्य रूप खानी ।
इत्यादि तुम विभूती, कहनेको कोन ज्ञानी ॥ ११ ॥

पाकर भी सर्व संपद, तृष्णा बढ़ी तुमारी ।
इच्छा करी हे जिनवर, पानेको मुक्ति नारी ॥ १२ ॥

संसार छोड चंचल, तिथि जन्मको जिनेश्वर ।
तप जाय वनमें लीना, हर्षित भये सभी नर ॥ १३ ॥

सब घातिकर्म ईंधन, ध्यानाग्निसे जलाकर ।
सित पोष दशमि तिथिको, केवल दिया चराचार ॥ १४ ॥

कीनी कुबेर आकर, रचना समवसरण की ।
इन्द्रादि देव मिलकर, अ ये शरण चरणकी ॥ १५ ॥
सौधर्म इन्द्र आ फिर, तुमको प्रणाम करके ।
की यों स्तुती मनोहर, शिर को नमाय करके ॥ १६ ॥
शिव मार्गविधि विधाता, ब्रह्मा जिनेश तुम हो ।
सब जगको बोध दाता, बुध हे जिनेश तुम हो ॥ १७ ॥
आत्मीक सुख प्रकर्ता, शंकर जिनेश तुम हो ।
सब लोकमैं प्रगट जिन, पुरुषोंमें श्रेष्ठ तुम हो ॥ १८ ॥
तुम नाम स्मर्ण तें जिन, रोगिनके रोग जावैं ।
सर्पादि विष धरोंके, विष शीघ्र ही नशावै ॥ १९ ॥
तुम नाम मंत्र जपतें, ग्रह दुष्ट सब पलावैं ।

दुर्भिक्ष चोर मारी, प्रेतादि ना सतावैं ॥ २० ॥
सिंहादि क्रूरता तज, आति मित्रता दिखावैं ।
निज दर्प छोड अरि गण, चरणोंमें शीश नावैं ॥ २१ ॥
सेवा तुमारि जो भी, करते हैं हे जिनोतम ।
पाते हैं सर्व सम्पद, हे नाथ ! वे नरोतम ॥ २२ ॥
करते हैं ध्यान जो जन, मनमें तुम्हारा निश दिन ।
संसार ताप उनका, होता है दूर हे जिन ॥ २३ ॥
सव कर्म क्लेश तजकर, पाते हैं शान्ति वे नर ।
यातैं हे नाथ तुमको कहते, हैं शान्ति मुनिवर ॥ २४ ॥
इत्यादि करके संस्तव, आनन्दमग्न होकर ।
वे इन्द्रराज बैठे, अपनी सभामैं जाकर ॥ २५ ॥

५

भई द्वादशांगमय जिन, दिव्यध्वनी तुम्हारी ।
सबही का भ्रम मिटाया, गणधरने कंठ धारी ॥ २६ ॥
करके विहार सबही, देशोंमें तुम हे स्वामी ।
धर्मोपदेश देकर, किये भव्य मोक्षगामी ॥ २७ ॥
छवि हेम चिन्ह मृगका, लख वर्ष आयु पाई ।
चालीस चाप काया, जिन आपकी सुहाई ॥ २८ ॥
गिरिवर समेदतैं तुम शुभ जन्मकी तिथी दिन ।
पाई वो नित्य लक्ष्मी जो है अनन्त स्वामिन ॥
जल आदि द्रव्य लेकर पूजूं मैं हे जिनेश्वर ।
कर शांति शांति स्वामिन 'हीरा' के नाथ ईश्वर ॥

ओंह्रीं श्रीशांतिजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ कुंथु नाथजी।

चाल उमाऊ।

वंदू भावमे श्री कुंथुनाथ जिनराय (टेर)
सरवारथसिधि त्याग प्रभू तुम हस्तिनागपुर आय।
सावन वदि दशमी शुभ दिनको गर्भ वसे जिनराय ॥ १ ॥
सूर्यराज नृप तात तिहारे श्रीमति भई तुम माय।
सुदि राकें वैसाख जन्म ले सुरनर मन हरषाय ॥ २ ॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर तीनों पद तुम पाय।
भूमि साध छह खंड किये वश वडे वडे नृपराय॥ ३ ॥
भोग भोग बहुकाल निरंतर इन्द्रिय मन सुखदाय।
शितराकें वैसाख दिवसको भये नाथ मुनिराय ॥ ४ ॥

चैत शुक्क शुभ तीज दिवसको घाती सर्व नशाय ।
केवलज्ञानयुक्त हो जगको मोक्ष मार्ग वतलाय ॥ ५ ॥
जन्म तिथीको ही हे प्रभु तुम कर्म अघाति क्षिपाय ।
खड्गासनतैं गिरि सम्मेदपर भये मुक्तिके राय ॥ ६ ॥
आयु पिचौंणवै लाख व सकी पांच तीसैं धनु काय ।
चिन्ह छागका भया मनोहर हेम कान्ति मन भाय ॥ ॥
कुंथ आदि सवही जीवनकी रक्षा विधि वतलाय ।
सव जगमैं विख्यात भये तुम कुंथनाथ सुखदाय ॥ ८ ॥
नेत्र सफल भये हे जिन मेरे तुम दर्शनको पाय ।
चरण नमनसे मस्तक मेरा हुआ सफल जिनराय ॥ ९ ॥
करण सफल भये तुम गुण सुनकर जिव्हा तुम गुन गाय ।

करयुग सफल भये हे जिनवर तुमपद अर्घ चढाय ॥ १० ॥
सवही अंग पवित्र भया प्रभु तुम सेवा मैं आय ।
निर्मल चित्त भया अब मेरा तीनों शल्य नशाय ॥ ११ ॥
'हीरा' तुमसे अरज करत है वार वार शिर नाय ।
जन्म मरणका दुःख मिटावो करुणा कर जिनराय ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ अरहनाथजी ।

चाल उड़ाऊ ।

हो अरहनाथ प्रभूजी मैं तुम, पूजन आया । तुम भक्ति
वसी उर मांहि जिनेश्वर, मैं तुम पूजन आया ॥
अपराजितको तजकर प्रभु तुम, हथनापुर अपनाया ।

मिश्रादेवीके उर आये, तातं सुदरशन पाया ॥ १ ॥
गर्भ दिवस फागुण सुदि तृतिया, राज वंश उमगाया ।
जनम लिया मगशिर सुद चोदस, तीन लोक हरषाया ॥ २ ॥
देवादिकने उत्सव कीना, सर्व जगत सुख पाया ।
उमंगवढी आनंद की हरिके, तांडव नृत्य रचाया ॥ ३ ॥
ताथेइ ताथेई नृत्य कराया, करसे चमर ढुराया ।
छम छम छम छम घूघरू वाजे, घननन घंट वजाया ॥ ४ ॥
द्रम द्रम द्रम द्रम मृदंग बजाई, झननन झांझ बजाया ।
वीन वासुरी आदि वजाकर, ताल सहित सुर गाया ॥ ५ ॥
मधुर मधुर वाणी सुन सवही, दर्शक गण हरषाया ।
इत्यादिक उत्सव इन्द्रादिक, करके अति सुख पाया ॥ ६ ॥

अपने अपने अस्थान गये सव, जगमें आनंद छाया।
युव होय छह खंड राज पा, सव जन सौख्य बढाया ॥ ७ ॥
मग शिर सुदि एकम तप लीना, आतम ध्यान लगाया।
सोलै वर्ष छद्मस्थ रहे फिर, घाति चतुष्क नसाया ॥ ८ ॥
कातिक वदि वारस दिन तुमने, पद अरहंत लहाया।
दे उपदेश भव्य बहु तारे, मोक्षमार्ग बतलाया ॥ ९ ॥
सहसचौरासी वरस आयु धर तीसैं धनुष तन पाया।
मीन चिन्ह शुभ भया तिहारे कनक वर्ण दरसाया ॥ १० ॥
चैत वदी मावस शुभ तिथिमें मुक्ति थान तुम पाया।
पंचमगतिको पाय प्रभू तुप जोति स्वरूप धराया ॥ ११ ॥
अनादि कालसे चहुंगत मांही सुख स्वपने नहिं पाया।

पाप कर्म बहु मैंने कीने जैनवचन नहिं भाया ॥ १२ ॥
अष्ट द्रव्य प्राशुक संग लाया मनमें हर्ष बढाया ।
नाच गाय कर पूज रचाई, पुण्य भंडार भराया ॥ १३ ॥
पुण्य उदय मम आज भयो प्रभु चरणन चित्त लगाया ।
अष्ट कर्मका संग छुडावो 'हीरा' शीश नवाया ॥ १४ ॥

दोहा ।

हे कुरुवंशी चन्द्रमा तुम गुण अगम अपार ।
सुरगुरु वरणन कर थके पावे को प्रभु पार ॥

ओं ह्रीं श्रीअरहनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ मल्लिनाथजी ।

चाल जंगला बरवा

जिनेश्वर मल्लि मैं तेरी शरण चरणोंमें आया हूं ।

पूरिये आश मो मनकी, विपद से मैं दुखाया हूं ॥ टेर ।
छोडकर थान अपराजित वास मिथिलापुरी कीना ।
चैतकी शुक्ल प्रतिपदको, प्रभू तुम गर्भ आ लीना ॥ १ ॥
कुंभराजा पिता तुमरे, भये अति धीर बलधारी ।
प्रजावति नाथ तुम माता, सकल गुणयुक्त अविकारी ॥२॥
शिता एकादशी मगशिर, लिया अवतार हे जिनवर ।
शची इन्द्रादि आये मिल, भया आनंद सब घर घर ॥३॥
रहे तुम बालब्रह्मचारी, वाढ नव शील की ठानी ।
चमक विजली की जों तुमने, सकल संपद अथिर जानी ॥४॥
सुकल मगशिर की तेरसको, धरा मुनि वेष जा वनमैं
रहे दिन तीन थिर आसन, भये लवलीन आतममैं ॥ ५॥

अरज 'हीरा' की सुन स्वामी निकालो शीघ्र भववनसे ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ मुनिसुव्रतनाथजी ।

चाल मांड

मुनिं सुव्रत स्वामी मैं तो थांनै पूजूं मन वच काय ॥ टेर ॥
प्राणत दिवको छांडके जी राजग्रही मैं आय ।
सांवण बदिकी दोज तिथिको, गर्भ वसे जिनराय ॥ १ ॥
नृप सुमित्र पितु आपके जी पदमावति भइ माय ।
बदि दशमी वैसाखको जी लीनूं जन्म धराय ॥ २ ॥
राजसंपदा त्यागके प्रभु तपइच्छा मनलाय ।
सुदि दसमी वैसाखको जी बैठे ध्यान लगाय ॥ ३ ॥

अरज 'हीरा' की सुन स्वामी निकालो शीघ्र भववनसे ॥२१॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणकप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ मुनिसुव्रतनाथजी ।

चाल मांड

मुनि सुव्रत स्वामी मैं तो थांने पूजूं मन वच काय ॥ टेर ॥

प्राणत दिवको छांडके जी राजग्रही में आय ।
सांवण वदिकी दोज तिथिको गर्भ वसे जिनराय ॥ १ ॥

नृप सुमित्र पितु आपके जी पद्मावति भइ माय ।
वदि दशमी वैसाखको जी लीनूं जन्म धराय ॥ २ ॥

राजसंपदा त्यागके प्रभु तपइच्छा मनलाय ।
सुदि दसमी वैसाखको जी बैठे ध्यान लगाय ॥ ३ ॥

द्वादश विधि तपधारके जी दीने कर्म क्षिपाय ।
वदि नवमी वैसाखको जी लीनो केवल पाय ॥ ४ ॥
द्वादशांग वाणी खिरीजी सकल जीव सुखदाय ।
दशमी फागुण कृष्णको प्रभु लीनी मुक्ति बराय ॥ ५ ॥
इन्द्र नरेन्द्र फणेन्द्र मिल सब कीनो उत्सव आय ।
आनंद मंगल गायकेजी बहु बिधि साज सजाय ॥ ६ ॥
कच्छप चिन्ह रु श्याम छवि जिन, बीस धनुषकी काय ।
वरस सहस प्रभु तीसकीजी भई आयु सुखदाय ॥ ७ ॥
"हीरा" चहुंगत कीचमेंजी लिपटा कर्म बसाय ।
अब उज्वल प्रभु कीजियेजी करुणा नीर बहाय ॥ ८ ॥
तीर्थंकरहो वीसवेंजी मुनिसुव्रत जिनराय ।

आशा बिसवा बीस है जी नैया पार लगाय॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ नेमिनाथजी।

चाल चौपाई।

श्रीनमिनाथ चरण युग ध्याऊं अष्ट द्रव्य ले अर्घ चढाऊं ।
आश्विन दोज कृष्ण हे स्वामी तज अपराजित अन्तर्यामी ॥
वप्रा माताके उरआये मिथिलापुरमें आनंद छाये ।
बदि असाढ दसमी जगत्राता जन्मलिया सबको सुखदाता ॥
युवा होय तुम हे जिनराई भोगी राज्य विभव सुखदाई ।
कारण पा आतमरस भीना, जन्मतिथीको तुम तप लीना ।
दुर्द्धर तप नव वर्स करीना, शुक्ल ध्यानकर घाति हरीना ॥

मगसर सुद ग्यारस शुभ मानी आप भये प्रभु केवलज्ञानी ।
धनपति सुरपति आज्ञा पाई समोसरण विधि आय रचाई ॥
मानस्थंभ रु सरवर खाई पुष्प वाटिका कोट बनाई ।
नाटशाल अरु उपबन सोहै वेदी ध्वजा शाल मन मोहै ॥
कल्पद्रुम बनस्तूप सुहाये महल पंक्ति अरु कोट बनाये ।
ताबिच द्वादश सभा रचाई गंध कुटी राजत जिनराई ॥
वृक्ष अशोक रु रत्नसिंहासन भामंडल भव सप्त प्रकाशन ।
चौसैंठ चमर छत्रत्रय सोहै दिव्यध्वनि सब जनमन मोहै ॥
पुष्प वृष्टि अरु दुंदभि बाजै यह अठ प्रातिहार्य तुम राजै ।

दोहा ।

गणधर सैंतरह जानिये वादी एकहजार ।

पंद्रासो भये केवली प्रतिगण बीसहजार ॥
पैंतालीसो आर्यका वैक्रिये डेढहजार ।
एकलाख श्रावक भये हे नमिजिन तुम लार ॥
चौईसो इक्यानवे बरस नाथ सुखरास ।
कर विहार सब देशमें किया धर्म परकास ॥

चाल ।

चौदस वदि वैसाख सु आई, गिरि समेद तें मुक्ती पाई ।
सब सुरनर मिल मंगल गाया, मोक्ष कल्याण जिनेस कराया ॥
वीस हजार वरस जिनराई, आयु भई छवि हेम सुहाई
पंद्रा धनु तन उन्नत से है, लक्षण रक्त कमल मनमोहै ॥१३॥

दूहा ।

चहुंगत "हीरा" वहु फिरो, कहूं न पायो चैन ।

अष्ट कर्म के जालसे, पाया दुख दिन रैन ॥१४॥
आया शरणै आपके, और न पाई ठौर।
अबतो सुखमय कीजिये, अरज करूं कर जोर ॥१५॥

ओं ह्रीं नमिनाथजिनेंद्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ नेमनाथजी।

चाल।

हो नेमजिन तुम वाल ब्रह्मचारी, पूजूं अष्टद्रव्य भरि थारी।
अपराजित को छांड प्रभु तुम, सौरीपुर सुखकरी ॥१॥
सेवादेवी के उर आये, कातिक छिठ उजियारी।
जनमालिया सावन सुदि छिठको, हे जगके हितकारी ॥२॥
समुदविजय के भये सुनंदन, श्याम वरण तन धारी।

बाल चंद्रवत युवा भये वह, युवती जनमनहारी ॥३॥
रूपवती कन्या राजुलसे, ब्याह करन चितधारी ।
सज बरात जूनागढ पहुंचे, उमंगभई सब लारी ॥४॥
पुर समीप दुखिया पशु गण लख, भया दुःख चितभारी ।
ब्याह काज इनका वध होगा, सुन यों चित्त विचारी ॥५॥
धिक इन्द्रिय सुख जिनके कारण, करत अनर्थ अनारी ।
जिह्वा इन्द्रिय लोलुपतातें, त्रस पर धरत कटारी ॥६॥
काट काट उनको खावत हैं, बुद्धि गई सब मारी ॥७॥

नाराच ।

यों विचार करते करते ही, राग भाव सब दूर किया ।
सर्व परिग्रह त्याग नाथने, अनुप्रेक्षामें चित्त दिया ॥८॥

अथिर सर्व यह वस्तु जातहै, विजलीवत संपद सारी।
नहीं भरोसा है इस तनका, जगमैं है किसकी नारी ॥९॥
नहीं शरण इस जगमैं कोई, मरना सवको पडताहै।
एक क्षणिक भी मृत्यु राजतैं, कौन बचा यहां सकताहै ॥१०॥
गती च्यार में रुलता रुलता, जीव जगत मैं फिरता है।
कर्मोंके वस दुखी भया अति, पलभी दम नहिं धरता है ॥११॥
इस संसार महावनमैं यह, जीव अकेला भ्रमता है।
साथी सगा न कोई इसका, भिन्न सभीसे रहता है ॥१२॥
हाड मांससे बना अशुचि अति, मल मूत्रादिक का घर है।
प्रेम करै ऐसे अंग मांही, ऐसा कौन चतुर नर है ॥१३॥
छिद्र युक्त नावमैं जैसे, पानी क्षण क्षण भरता है।

कर्मांश्रव आतम भी तैसे, योग द्वारसे करता है ॥१४॥
व्रत समिती आदिकतें जब यह, आश्रव सब रुक जाता है।
संवर युक्त आतमा निर्मल, चारित में तब रमता है ॥१५॥
ध्यान अग्नितें करत निर्जरा, पूर्व कर्म सब झडते हैं।
तब कर्मोंके नाश होतही, लोक शिखर पर चढते हैं ॥१६॥
क्षमा आदि हैं धर्म जीवके, योगी इनमें रमते हैं।
येही है शिव मारग जगमें, भव्य इन्हीमे निरते हैं ॥१७॥
अधो मध्य अरु उर्ध्व भेदतें, त्रिविध लोक षड द्रव्य भरा।
यातें भिन्न अलोक सभी हैं जानत हैं सर्वज्ञ नरा ॥१८॥
इस संसार चतुरगति मांही, नरभव अतिही दुर्लभ है।
तामें भी उत्तम कुल दुर्लभ, रत्नत्रय अति दुर्लभ है ॥१९॥

यातैं अब उत्तम व्रत धरकर, कर्म नाश करना चाहिये ।
पलभर भी दुर्लभ नरभव यह, निष्फल नहिं खोना चाहिये॥२०॥
इस प्रकार चिंतन करतेही, लौकांतिक रिषि भी आये ।
जय नंदादिक शब्द उचरते, प्रभु चरणोंमें शिरनाये ॥२१॥

दोहा ।

ऋषि गणने यों स्तुति करी, धन्य धन्य जिनराज ।
यह विचार अच्छा किया, निज अरु पर हितकाज ॥२२॥
स्वयं बुद्ध प्रभु आप हो, कौन करै उपदेश ।
हम नियोगवश दर्शको, आये हे लोकेश ॥२३॥
इत्यादिक स्तुति कर गये, लौकांतिक निज थान ।
सावन सुदि छठिको हुवा, प्रभुका तप कल्यान ॥२४॥

प्रभु तो दीक्षा लेगये, यह सुन राजुल नार ।
अति दुःखित हो चित्तमें, फिर यों किया विचार ॥२५॥
पति विन जीवन है वृथा, पती गये गिरनार ।
संयम धरना उचित है, अब उनही के लार ॥२६॥
यह विचार अति शीघ्रही, प्रभुके सन्मुख जाय ।
भई आर्यका वो सती, धन्य धन्य जगमाय ॥२७॥
दिन छप्पन छद्मस्थ रह, पायो केवलज्ञान ।
आश्विन सुदि राकें दिवस, जग प्रगटावन भान ॥२८॥
कर विहार सब देशमें, धर्मामृत वरसाय ।
सातें शुक्ल अषाढको, भये मुक्त जिनराज ॥२९॥
काय धनुष दसकी भई, सहस्र वर्ष की आय ।

मुक्तिस्थान गिरनार अरु, संख चिन्ह सुखदाय ।।३०।।
हे भवि कुमुद निशेश जिन, तुम गुण अगम अपार ।
"हीरा" याचत है यही, हूं भवसागर पार ।।३१।।

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय पंचकल्याणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पार्श्वनाथजी ।

चाल छंद कवित्त ।

हो जी पारसनाथ प्रभु मैं, तुमको पूजन आयाजी ।
भक्ति भावके प्रगट करनको, आठों अंग नमायाजी ।।१।।
तज प्राणत दिव नगर बनारस, वामा उरमें आयेजी ।
आसित दोज वैशाख मासमें, अश्वसेन हरषायेजी ।।२।।
जन्म चैत्र सुदि ग्यारस के दिन, दश आतिशययुत पायाजी ।

तिनका वर्णन गणधरादिने, आगममैं यों गायाजी ॥३॥
अतिशय रूप अतुल्य बल, नाहिं पसेव निहारोंजी ।
तन सुगंध प्रिय हित वचन, रुधिर स्वेत आकाराजी ॥४॥
लक्षण सहस रु आठ तन, समचतुष्क संठांनाजी ।
वज्र वृषभ नारांच युत, जन्म आपका मानाजी ॥५॥
बाल ब्रह्मचारी रह प्रभुने, राज्य भोग सब त्यागेजी ।
वदि ग्यारस वैसाख मासमैं, मुनि वन शिवमग लागेजी ॥६॥

चाल सोरठा ।

एक दिवस जिनदेव, बैठे निश्चल ध्यानमैं ।
पूरव वैरी एक, कमठ जीव आया तहां ॥७॥
लाल नेत्र अतिक्रूर, क्रोध अग्नि तैं जलत अति ।

किये उपद्रव भूरि, तिनका कुछ वर्णन करूं ॥ ८ ॥
वर्षा मूसल धार, वरसाई उस दुष्टने ।
चली प्रचंड वयार, परवत भी तृणवत उडे ॥ ९ ॥
वर्षाये पाषाण भीम अग्नि वर्षा करी ।
हाहाकार महान, करत भूत वेताल अति ॥ १० ॥
इत्यादिक विकराल, हांत उपद्रव प्रभु खडे ।
ज्यों मेरु गुणमाल, भई खवर धरणेन्द्रको ॥ ११ ॥
मस्तक लिये चढाय, पद्मावतिने आनकर ।
नागराजने आय, फड मंडप प्रभु पै किया ॥ १२ ॥
दूर भये उपसर्ग, भगा असुर भयभीत हो ।
घाति कर्म संसर्ग, भया दूर प्रभु का तदा ॥ १३ ॥

दोहा ।

चैत कृष्ण की चोथ तिथि, प्रगटा केवल ज्ञान ।
समवशरण रचना करी, धनपतिने तहां आन ॥ १४ ॥
योजन शत इकमैं सुभिख, कवलाहार न होय ।
वढे नही नख केश अरु, उपसर्गादि न कोय ॥ १५ ॥
दीखत मुख चहुं दिशि प्रभु, गगन गमन सुखकार ।
सब विद्या ईश्वरपनो, अर्दया नाहि लगार ॥ १६ ॥
अनिमिष हग प्रभु की भई, तन छाया नहिं लार ।
अतिशय केवल ज्ञानके, प्रगट भये दश सार ॥ १७ ॥
देव चरित चौदह भये, अर्ध मागधी भास ।
आपसमैं अति मित्रता, विमल दिशा आकास ॥ १८ ॥

फलै फूल फल सर्व ऋतु, भूमी काच समान ।
प्रभु चरणों तल कमलहै, नभतैं जय जय गान ॥१९॥
मंद सुगंध समीर अरु, गंधादिककी वृष्टि ।
निष्कंटक भूमी भई, हर्षित सवही सृष्टि ॥२०॥
धर्म चक्र आगे रहे, मंगल आठ प्रकार ।
अतिशय यों श्री पार्श्वके, प्रगट भये सुखकार ॥२१॥
तरु अशोक जग शोकहर, रतन सिंहासन जान ।
तीन क्षत्र प्रभु शिर लसैं, भामंडल सुखखान ॥२२॥
पुष्प वृष्टि होवै सदा, दिव्यध्वनि जगसार ।
ढारे चौंसठ चमर जख, वाजै दुंदुभि लार ॥२३॥
केवल ज्ञान अनन्त सुख, केवल दर्शन जान ।

बल अनंत यह नाथके, घाति नाशतैं मान ॥ २४॥
केवल उपज्यो जानकर, सब देवन संग आय ।
इन्द्रराज अति भक्ति युत, प्रभुको शीश नमाय ॥ २५॥
प्रभु सन्मुख अति मग्न हो, गद्य पद्य मय सार ।
रचना कर यों स्तुति करी, भवि जीवन सुखकार ॥ २६ ॥

चाल तोटक छंद ।

तुम मुक्ति मार्ग प्रगटन दिनेश, भवताप हरण करता निशेश ।
जनमादि रोग हर वैद्यराज, सेवत तुम पद सब देवराज ॥२७॥
तुम वचनामृत कर पान हंस, भये सर्प युगल मरकर निगीश ।
तुम नाम मंत्र जपते जिनेश, क्षय होय रोग शोकादि क्लेश ॥२८॥
नहिं सिंह व्याघ्र नहिं सर्प खाय, डाकिनि शाकिनि योगिनि पलाय

ग्रह अशुभ सर्व शुभ फल करंत, सब पाप कर्म नाशत तुरंत ॥
तुम ज्ञान महोदधि है अमेय, तामैं विंदूवत जग प्रमेय ।
तुम गुण अनन्त हैं हे जगीश, कहनेको समरथ नहिं गणीश ॥

दोहा ।

इत्यादिक संस्तव किये, इन्द्रराज हरषाय ।
फिर बैठे निजस्थानमैं, सुमरत गुण जिनराय ॥३१॥
दिव्य ध्वनि जिनदेवकी, सर्व अर्थ मय सार ।
सुर नर मुनिजन हित करी, भई सर्व सुखकार ॥३२॥
कर विहार बहु काल लों, धर्मामृत वर्षाय ।
सावन सुदि आठैं दिवस मुक्ति वरी जिनराय ॥३३॥
ता दिनतैं सम्मेद का, भया पार्श्वगिरि नाम ।

मन वच तनसे मैं करूं, वारम्वार प्रणाम ॥ ३४॥

गिरि समेद की वंदना, करण जात जे लोक।
अति उन्नत बहु दूरतैं, देख करत हैं ढोक॥३५॥

हरित वर्ण नव हस्तकी, भई नाथकी काय।
चिन्ह भया शुभ सर्पका, वरस एकंशत आय ॥३६॥

तुम सेवातैं हे प्रभो, पदमावति धरणेन्द्र।
लोकविषैं नामी भये, पूजन हार जिनेंद्र ॥३७॥

तुम चरणोंकी सेवतैं, आधि व्याधि नश जात।
"हीरा" याचत हैं यही, मुक्ति पठावो तात ॥३८॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पंचकल्याणप्राप्तये ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ श्रीवर्द्धमान ।
चाल छंद पद्धडी ।

जय वर्द्धमान गुण गण निधान, सेवैं मुनिजन तुम चर्ण आन ।
अपराजित ताजि कुंडल पुरेश, नृपवर सिद्धारथ घर जिनेश ॥
ब्रह्मादेवी उर वसे आय, सुदि साढ षाष्ठि दिन जगतराय ।
जनमे सुदि तेरस-चैत्रमास, वंदित ही होवै पाप नाश ॥ २ ॥
जब अष्ट वरस के भये नाथ, इक दिन बहु राजकुमार साथ ।
वन क्रीडा करते वीर धीर, देखे संगम सुरने गंभीर ॥ ३ ॥
प्रभु धैर्य परीक्षा करण काज, इक किया उपद्रव कपट साज ।
भया कृष्ण सर्प अतिही विशाल, ताके फण सहश्र भये कराल ॥
क्षण क्षण विष उगलत नेत्र लाल, फूत्कार करत जों निकट काल ।
देखत ताको सब नृप कुमार, डर डर कर भागे धैर्य छार ॥ ५ ॥

सोरठा ।

देख भयंकर व्याल, हर्षित प्रभु तापर चढे ।
खेलन लगे कृपाल, ज्यों फूलन की मालमें ॥६॥

दोहा ।

देख प्रभू की धीरता, निर्भय हृदय विशाल ।
सुरने माया दूर कर, धर्‍यो चरणमें भाल ॥ ७ ॥
बाल अवस्था देख तुम, अतुल शक्ति नहिं जान ।
कीनो जो अपराध मैं, क्षमिये दयानिधान ॥ ८ ॥
वार वार यों अरज कर, मनमें बहु पछताय ।
संगम सुर निज थानमें, गया पूज जिनराय ॥ ९ ॥
तीस बरस वय जब भई, प्रभु मन भया विराग ।

मगशिर सुदि दशमी दिवस, दिया परिग्रह त्याग ॥ १० ॥
इक दिन बैठे ध्यानमैं, दुष्ट रुद्रने आय ।
किये उपद्रव अति प्रबल, सुनत हृदय फट जाय ॥ ११ ॥
प्रभू मेरुवत थिर रहे, युक्ति चली नहिं एक ।
तब लज्जित हो रुद्रने, छोड दई सब टेक ॥ १२ ॥
नम्र होय अति स्तुति करी, पूजे प्रभुके पाय ।
फिर अपने थानक गया, वार वार शिर नाय ॥ १३ ॥

चाल छंद तोटक ।

एक दिवस प्रभु करत विहार, देख चंदना हर्ष अपार ।
किस विधि प्रभुको दूं अहार, यों ताके मन भया विचार ॥ १४ ॥
बंधन टूटगये तत्काल, भाजन भया स्वर्ण का थाल ।

बनगये कोदूं तंदुलभात, वो यों कहत भई हे तात ॥ १५॥
तिष्ठ तिष्ठ है शुद्ध अहार, लीजे होवे कृपा अपार।
सती करनतैं लियो अहार, सुरगण कीनों जय जय कार ॥१६॥
दोहा—दुख दूर सवही भया, कुटुंब मिला सव आय।
धन्य धन्य सति चंदना भये वीर प्रभु साय ॥ १७॥
प्रभुने द्वादश वर्षलों किई तपस्या सार।
दशमी सुदि वैसाखकी भव्य जीव सुखकार ॥ १८॥
घाति नाश प्रभुके भये उपज्यो केवल ज्ञान।
समवशरण रचना करी धनपतिने तहां आन ॥१९॥
सोरठा—सर्व जीव तहां आय बैठे निज निज स्थानमैं।
दिव्य ध्वनि जिनराय भई जगत हित करनको ॥ २०॥

जीवाजीव पदार्थ इनके भेद प्रभेद सव ।
षड द्रव्यादिक सार्थ नय प्रमाण सव कथन कर ॥२१॥
रत्नत्रय समझाय मुनि श्रावक के धर्म का ।
वरणन कर जिनराय मुक्ति मार्ग प्रगटन किया ॥ २२ ॥

दोहा—विहरण कर सव देशमैं द्वादशांग दरसाय ।
धर्म तीर्थ प्रचलित किया हे त्रिभुवनके राय ॥ २३ ॥
कार्तिक मावस दिवसको प्रातः काल मझार ।
पावापुरतैं जिन भये मुक्तिरमा भरतार ॥ २४ ॥
तादिनतैं इस लोकमैं दीपावली विधान ।
कार्तिक मावस दिन करत सर्व जीव शुभ मान ॥ २५ ॥
तुम मंदिर आ प्रातही हे त्रिभुवन के राय ।

प्रगट करत निज मोद सब मोदक चरण चढाय ॥ २६ ॥

सप्त हस्त तन कनक सम वरस बहतर आय ।

हरिवंशी हरिचिन्ह जिन वंदू शीश नमाय ॥ २७ ॥

तुम तीरथ अबलों करत सकल जगत उपकार ।

'हीरा' आया तुम शरण अब तो वेग उवार ॥ २८॥

ओं ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय पंचकल्याणप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

महा अर्घ ।

अडिल्ल—वृषभ आदि वीरांत चतुर्विंशति जिन देवा ।

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र करैं जिनकी नित सेवा ॥१॥

चक्री आदिक नमैं चरण तुम हे जगराई ।

अष्ट द्रव्य भर थाल पूजहूं मन वच काई ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्योऽर्घं महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ आशीर्वाद ।

जिन पूजातैं पुन्य बढै सब पाप पलाईं ।
रिद्धि सिद्धि सब होय दुःख दारिद्र नशाईं ॥ १ ॥
परभवमैं सुर होय इन्द्र चक्री पद पाईं ।
केवल ज्ञान उपाय लहै मुक्ती सुखदाईं ॥ २ ॥

दोहा—यातैं जिन पूजा सदा, करिये भक्ति वढाय ।
अष्ट द्रव्य भरि थालमैं प्रभु चरणों चित लाय ॥

अथ शांतिपाठ ।

सोरठा—चौवीसों जिनराज, शांति करो सब जगत में ।
नृपति, प्रजा, मुनिराज, आदि सभी का दुख हरो ॥

आडिल्ल—शांति करो जगमाहि विघ्न सबही हरो ।
दुःख सभी के हरो सर्व जन सुख करो ॥

मंगल जगमें करो पाप सबके हरो ।
पुण्य वृद्धिगत करो रोग सब क्षय करो ॥

वसंततिलका छंद ।

देवेंद्र देव जिनको नित पूजते हैं, जो जीवका जगत बंधन तोडते हैं ।
वे शांतिनाथ जिन शांति करो हमेशा, मेरे हरो सकल कर्म महा कलेशा ॥

स्रग्धरा छंद ।

धर्मात्मा भूप होवे, अरु सकल प्रजामें सदा क्षेम होवें ।
वर्षा हो खूब भूपै समय समयपै, व्याधिका नाश होवे ॥
दुर्भिक्ष प्लेग चोरी क्षण भर न रहे पापका नाश होवे ।
श्रीमद्वीर[1] प्रभूका सुवृष[2] जगतमें सर्वको सौख्य देवे ॥

१ श्री महावीरस्वामीका २ धर्म ।

शिखरिणी छंद।

अहो शांति स्वामिन् सब सुख करो जीव गणके।
कृपातें 'हीरा' के सब दुख हरो भूभ्रमण के॥
महा दुःखी मैं हूं भटक नित संसार वन में।
पड़ा आके मैं हूं प्रभु अब तुमारे चरण में॥

इति शांतिपाठः।

इष्ट प्रार्थना।

अडिल्ल—करूं शास्त्र अभ्यास और जिनपति नमूं।
श्रेष्ठ जनोंकी करूं संगती मन दमूं॥
विज्ञजनों के करूं गुणों की नित कथा।
करूं किसी के नहीं दोषकी मैं कथा॥

सबको प्रियहित वचन बोलकर सुख करूं।
निज आतमके मांहि सदा मैं रति धरूं॥
करूं भक्ति से सेव प्रभो तुम चरण की।
नहीं लहूं अब कभी पीर भवभ्रमण की॥

उपजाति छंद।

सुपाद तेरे मन मांहि मेरे। सुचित्त मेरा पद मांहि तेरे॥
तोलों रहे हे जिननाथ स्वामी। जोलों बनूं मैं नहि मुक्तिधामी॥

सोरठा—सुख पावें सब जीव रोग शोक सब दूर हों।
मंगल होय सदीव यह मेरी है भावना॥

इति इष्ट प्रार्थना।

कायोत्सर्ग।

नव वार श्रीणमोकार मंत्र का शुद्ध मनसे जाप करना चाहिये।

अथ विसर्जन ।

चाल अडिल्ल ।

पूजन हर्षित होय करी मैने जिन स्वामी ।
अल्प ज्ञानतें लगे दोष क्षमिये जग नामी ॥
अक्षर मात्रा अल्प अधिक कीने उंच्चारण ।
सो सब क्षमिये दीन बन्धु हे अधम उधारण ॥
आह्वानन विधि ठान भक्तियुत पूजा कीनी ।
वार वार गुण गाय करी मैं स्तुति रसभीनी ॥
अब मेरी हे नाथ अरज है तुम चरणोंमें ।
यथापूर्व जिनदेव विराजो निजथानकमैं ॥

इति चौवीस तीर्थंकरोंकी भजनगानगर्भित पूजापाठ समाप्त ।

शुभं भूयात् ।